पत्र सूचना कार्यालय (रक्षा विंग)
भारत सरकार
****
'हर काम देश के नाम'

नई दिल्लीः श्रावण 04, 1944
मंगलवारः 26 जुलाई 2022

'आत्मनिर्भर भारत': रक्षा मंत्रालय ने सशस्त्र सेनाओं के लिए सॉफ्टवेयर डिफाइन्ड रेडियो के स्वदेशीकरण को उच्च प्राथमिकता दी

रक्षा मंत्रालय ने देश के प्रमुख अनुसंधान एवं विकास संस्थानों अर्थात् रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) कानपुर के साथ सॉफ्टवेयर डिफाइन्ड रेडियो (एसडीआर) के स्वदेशीकरण का तेजी से खोज निकाला है ताकि सशस्त्र सेनाओं द्वारा प्रचालनों के व्यापक परिदृश्य में बढ़ती मांग को पूरा किया जा सके। सुरक्षा संवेदनशील एसडीआर प्रौद्योगिकी और उत्पादों के लिए पूर्ण उत्पाद जीवन चक्र प्रबंधन रूपरेखा आवश्यक है। इसमें स्वदेशी रूप से प्रमाणित डिजाइन, विकास, विनिर्माण, परीक्षण/प्रमाणन और रखरखाव पारिस्थितिकी व्यवस्था शामिल हैं। रक्षा सचिव डॉ. अजय कुमार ने एसडीआर प्रौद्योगिकी के स्वदेशीकरण को उच्च प्राथमिकता देते हुए कहा कि यह सुरक्षित रेडियो संचार के क्षेत्र में 'आत्मनिर्भर भारत' के लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

स्वदेशी एसडीआर प्रौद्योगिकी के दो प्रमुख तत्व मानकीकृत ऑपरेटिंग सॉफ्टवेयर इन्वाइरेनमेंट (ओई) और संबंधित तरंग रूपों के भंडार और परीक्षण/प्रमाणन सुविधा के साथ अनुप्रयोग (जिसे तरंग रूप के रूप में भी जाना जाता है) हैं। मानकीकृत ऑपरेटिंग सॉफ्टवेयर इन्वाइरेनमेंट विभिन्न विक्रेताओं के सॉफ्टवेयर डिफाइन्ड रेडियो के बीच तरंग पोर्टेबिलिटी और अंतर संचालन को सक्षम बनाता है। इस दिशा में, रक्षा मंत्रालय ने इंडिया सॉफ्टवेयर कम्यूनिकेशन (एससीए) आर्किटेक्चर प्रोफाइल या इंडियन रेडियो सॉफ्टवेयर आर्किटेक्चर नामक भारत विशिष्ट प्रचालन वातावरण के कार्यान्वयन को परिभाषित करने और विकसित करने का निर्णय लिया है।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) कानपुर के निदेशक डॉ. अभय करंदीकर जो रक्षा मंत्रालय द्वारा गठित एससीए समिति के अध्यक्ष हैं ने 'इंडिया एससीए प्रोफाइल' की अवधारणा का मार्ग प्रशस्त किया है। एसडीआर के स्वदेशी विकास के लिए डीईएएल/डीआरडीओ द्वारा दिशा निर्देशित और समय-सीमा के साथ एक मसौदा परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार की गई है।

रक्षा मंत्रालय के रक्षा उत्पादन विभाग में मानकीकरण निदेशालय (डीओएस), डीआरडीओ, शिक्षा जगत और उद्योग जगत के साथ आईआरएसए के विकास को तीन से छह महीने में परिभाषा के साथ और संबद्ध संदर्भित कार्यान्वयन, परीक्षण तथा अनुपालन प्रमाणन उपकरणों के लिए अतिरिक्त 18 महीने में परिचालन करेगा।

सुगम नियंत्रण के माध्यम से आईआरएसए की उपलब्धता से भारतीय सॉफ्टवेयर विक्रेताओं को एसडीआर को एकीकृत करने और एसडीआर का पारस्परिक संचालन करने और सुरक्षा श्रेणीबद्ध करने में सक्षम बनाया जा सकेगा। आईआरएसए को डीओएस द्वारा अधिसूचित किया जाएगा और भारतीय

रक्षा/सुरक्षा बलों द्वारा उपयोग के लिए स्वदेशी एसडीआर के विकास और मित्र देशों को निर्यात करने की दिशा में उद्योग के साथ साझा किया जाएगा।

विकास में शामिल तीन संस्थानों डीईएएल/डीआरडीओ, आईआईटी-कानपुर और डीओएस ने डीपीआर के अनुसार कार्य शुरू कर दिया है। रक्षा सचिव डॉ. अजय कुमार ने सभी संगठनों पर भरोसा जताया और कहा कि यह महत्वपूर्ण उपकरणों के स्वदेशीकरण की दिशा में एक नया मानदंड बनाएगा जिसे अब तक आयात किया जाता है। इससे 'आत्मनिर्भरता' प्राप्त करने, आयात बजट को कम करने और सशस्त्र सेनाओं के लिए सुरक्षित रेडियो नेटवर्क तैयार करने के प्रयास को बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने कहा कि इसे समयबद्ध तरीके से पूरा करने का प्रयास किया जाएगा।

एबीबी/डीएस